SOCIOLOGY

B.A. Part II
Paper V
M.A. John

HERBERT SPENCER

INTRODUCTION

Herbert Spencer एक British दार्शनिक तथा समाजशास्त्री था। जिसके विचारों का प्रचार एवं प्रसार अधिक America में ज्यादा किया। वह एक व्यक्तिवादी समाजशास्त्री था। Comte के विचारों के अनुरूप ही उसने अपना सामाजिक उद्विकास का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। लेकिन इन दोनों के विचारों में पृष्ठभूमियों के दृष्टिकोण से अन्तर पाया जाता है। Spencer ने Comte के कार्य को आगे बढ़ाने एवं उसको विस्तृत करने का कार्य किया है। परन्तु Spencer ने Comte के विचारों का पूर्ण रूप से अनुकरण नहीं किया है बल्कि उसने कुछ बिन्दुओं पर Comte के विचारों का विरोध भी किया है। सामाजिक उद्विकास के विचार को Spencer ने प्रतिस्थापित करके समाजशास्त्र के वैज्ञानिक आधार का विकास किया है। Spencer ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक Synthetic Philosophy के दस भागों में Universal Evolution के सिद्धान्त का विश्लेषण किया है और इस सिद्धान्त को प्राणिशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं नीतिशास्त्र के क्षेत्रों में भी लागू किया है।

Theory of Social Evolution

Spencer द्वारा प्रस्तुत सभी सिद्धान्तों में उद्विकासीय सिद्धान्त को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। उसके दूसरे सभी सिद्धान्त एवं समाज विज्ञान की इसकी सम्पूर्ण व्यवस्था इसके उद्विकास के इसी सामान्य नियम पर आधारित है। उसका यह सिद्धान्त समस्त घटनाओं की उत्पत्ति एवं विकास के नियमों की व्याख्या करता है। यह सिद्धान्त

Scanned by CamScanner

जड़ चेतन एवं सामाजिक व्यवस्थाओं के सभी पक्षों पर लागू होता है। यह प्राकृतिक विज्ञानों के नियमों पर आधारित है उद्विकास की परिभाषा देते हुए spencer ने विचार किया है कि " उद्विकास एक प्रकार से परिवर्तन है, जो असम्बन्धित, अनिश्चित समरूपता की स्थिति से सम्बन्धित निश्चित, समरूपित विभिन्नताओं की स्थिति में होता है।

इस सिद्धान्त की आगे चर्चा करते हुए उसने यह विचार किया कि समस्त universe केवल दो चीजों के सन्तुलन से बना है। प्रथम, पदार्थ, द्वितीय गति। universe की समस्त जड़, चेतन एवं सामाजिक तथा असामाजिक सभी वस्तुओं में परिवर्तन के कारण यही दो तत्व हैं जो शक्ति के आधार हैं। आगे चल कर उसने यह विचार किया कि universe तीन मूल तत्वों द्वारा संचालित होता है।

(1) पदार्थ की अविच्छिन्नता
(2) गति की निरन्तरता
(3) शक्तियों में आकार एवं सामंजस्य

पदार्थ एवं गति के ये दोनों ही शक्ति के दो पहलू हैं। संसार इन दोनों के संतुलन से चलता रहता है। दोनों ही universe में Change लाने के लिये उत्तरदायी कारक हो सकते हैं। गति सदा ही पदार्थ को गतिशील बनाये रखती है। गति में कभी परिवर्तन या उसका विनाश नहीं होता गति 'हमेशा चलती रहती है। इसी प्रकार पदार्थ को पीसने, काटने या जलाने से कभी नष्ट नहीं होता उसका केवल रूपान्तरण होता है

इन दोनों के संतुलन एवं परिवर्तन से universe में परिवर्तन होता रहता है।

Spencer ने इन तीन मूल सत्यों से चार अंतिम मान्यताएं स्थापित की हैं। जो इस प्रकार हैं, प्रथम, शक्तियों के सम्बन्धों में संतुलन एवं परस्पर आकर्षण शक्तियों का अस्तित्व सदा समान रहता है। वे न तो शून्य से उत्पन्न होती हैं और न ही शून्य में परिवर्तित हो जाती है। Second शक्ति का कभी विनाश नहीं होता वो सदा एक समान रहती है और रूपान्तरित होती रहती है। Third — प्रत्येक वस्तु अधिकतम आकर्षण की ~~ओर~~ और चलती रहती है। Fourth — गति से निरन्तर परिवर्तन का चक्र चलता रहता है। इस प्रकार Spencer ने अपने इस सिद्धान्त को universe के क्रम के आधारों पर विश्लेषित एवं प्रस्तुत किया है।

Spencer ने यह विचार दिया कि universe की सम्पूर्ण व्यवस्था के पीछे एवं नियम काम करता है जो विकासात्मक प्रक्रिया में विभिन्न कारकों के मिश्रण को संचालित करता रहता है और उसे उद्विकास का नियम कहा जाता है। इस नियम के अनुसार जब पदार्थ का एकीकरण होता है तो गति चलायमान हो जाती है और यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है।

अपने इस सिद्धान्त के समर्थन में Spencer ने आगे यह विचार दिया है कि evolution process के परिणामस्वरूप universe

universe की प्रत्येक वस्तु या प्रत्येक पदार्थ में एक निश्चित तरीके से परिवर्तन होता है। इस विकासवादी प्रक्रिया में पदार्थ के change की दिशा अनिश्चितता, सामंजस्यरहित और असंबद्ध सजातीयता से सामंजस्ययुक्त एवं समन्वित विजातीयता की ओर है। Spencer की उद्विकासीय प्रक्रिया का यही लक्षण है।

Spencer ने यह भी विचार किया कि समाज के उद्विकास का अध्ययन समाजशास्त्र में होता है। उसने कहा कि समाजशास्त्र में समाज की क्रियाओं को निर्धारित करने ~~वाले~~ वाले समस्त कारकों का अध्ययन किया जाता है। उसने इन कारकों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है।

(i) मौलिक बाहरी कारक

(ii) मौलिक आन्तरिक कारक जैसे समाज का रूपान्तर

Spencer इस सामान्य सिद्धान्त के द्वारा यह बताना चाहता है कि समाजशास्त्र में इसका व्यापक प्रयोग करना चाहिये। उसने प्राकृतिक विज्ञानों के नियमों को समाजशास्त्र में लागू किया है।

— x —